

Padma Shri



SHRI RAMACHANDRA MANJHI

Shri Ramachandra Manjhi is a famous Bhojpuri folk dancer and theatre artist.

2. Born on 1st January, 1930, Shri Manjhi is the oldest living artist to have worked with and trained under the legendary Bhikhari Thakur. He began his career under his Guru Dinanath Manjhi as an actor, singer and a dancer at the age of 12, followed by a four-decade long association with Bhikhari Thakur under whom he developed his technique in movement and voice, and explored a range of performance traditions such as Launda Naach, Dhobiya Naach, Natua Naach as well as music styles of Ghazal, Qawwali, Nirgun, Bhajan, Dadra, Khemta, Thumri, Kajri, Purbi and Chaiti.

3. In his illustrious career of over eighty years, Shri Manjhi has been most widely known for the act of female impersonation. He has been most celebrated and fondly remembered for the role of 'Rakhailan' in the iconic play 'Bidesiya' apart from lead roles in all of Bhikhari Thakur's plays including Beti-Bechwa, Gabarghichor, Piya-Nisail, Ganga-Snan, Bhai-Virodh, among others.

4. Taking forward the legacy of his Guru, Shri Manjhi is currently associated with the Bhikhari Thakur Repertory Training and Research Centre through which he continues to teach young artists and students from different schools and colleges, as well as perform for rural and urban audiences across the country under the direction of Dr. Jainendra Dost.

5. Having graced the most eminent stages of theatre and dance in the country, Shri Manjhi has been honoured by the President of India with the prestigious Sangeet Natak Academy Award (2017). For his contribution to folk Music and Theatre in the State of Bihar, in 2020, he was conferred with the Lifetime Achievement Award by the Department of Art and Culture, Government of Bihar as well as with the Saran Gaurav Samman at the District level.



श्री रामचन्द्र माँझी

श्री रामचन्द्र माँझी प्रसिद्ध भोजपुरी लोक नर्तक और थियेटर कलाकार हैं।

2. 01 जनवरी, 1930 को जन्मे श्री माँझी सबसे अधिक आयु के कलाकार हैं, जिन्होंने महान कलाकार भिखारी ठाकुर के साथ कार्य किया तथा उनसे प्रशिक्षण प्राप्त किया। उन्होंने 12 वर्ष की आयु में अपने गुरु श्री दीनानाथ माँझी के सान्निध्य में एक अभिनेता, गायक और नर्तक के रूप में अपनी कलायात्रा आरंभ की। इसके बाद, उनका भिखारी ठाकुर के साथ चार दशक लंबा संबंध रहा, जिनकी देखरेख में उन्होंने गति और गायन में अपनी शैली विकसित की तथा लौंडा नाच, धोबिया नाच, नटुआ नाच जैसी प्रदर्शन कला परंपराओं में नए प्रयोग किए तथा गज़ल, कव्वाली, निर्गुण, भजन, दादरा, खेमटा, तुमरी, कजरी, पूरबी और चैती जैसी संगीत शैलियों को प्रस्तुत किया।
3. अपने अस्सी वर्ष के शानदार कला जीवन में श्री माँझी को महिला भूमिका निभाने के लिए व्यापक रूप से जाना जाता है। भिखारी ठाकुर के बेटी-बेचवा, गबरघिचोर, पीया-नीसैल, गंगा-स्नान, भाई-विरोध सहित सभी नाटकों में मुख्य भूमिकाओं के अलावा सुप्रसिद्ध नाटक 'बिदेशिया' में 'रखैलन' का किरदार निभाने के लिए भी उनकी भरपूर प्रशंसा की जाती है और उन्हें याद किया जाता है।
4. श्री माँझी अपने गुरु की विरासत को आगे बढ़ाते हुए, वर्तमान में 'भिखारी ठाकुर रेपरट्री ट्रेनिंग और रिसर्च सेंटर' के साथ जुड़े हुए हैं, जिसके जरिए वे विभिन्न स्कूलों और विश्वविद्यालयों के युवा कलाकारों और छात्रों को प्रशिक्षित कर रहे हैं तथा डॉ. जैनैन्द्र दोस्त के निर्देशन में देश के ग्रामीण और शहरी दर्शकों के समक्ष कला का प्रदर्शन कर रहे हैं।
5. श्री माँझी को, देश के सबसे प्रख्यात नाट्य और नृत्य मंचों पर प्रस्तुतियों के लिए, भारत के माननीय राष्ट्रपति द्वारा प्रतिष्ठित संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार (2017) से सम्मानित किया गया है। लोक संगीत और थियेटर में उनके योगदान के लिए, उन्हें 2020 में कला और संस्कृति विभाग, बिहार सरकार द्वारा लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड तथा जिला स्तर पर सारन गौरव सम्मान प्रदान किया गया।